

शुक्रासुमिवृत्
श्रीवशावाग्रवाङ्मानसि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



श्री वसुदेवाय नमः

(1)



धृक्कासुमिवृत
श्री वसुदेवाय नमः

उत्तराखण्ड

74/

ARCHIVES

ज्ञायामः॥ आचार्यनः चंथः थस्यं॥ सनाक्षत्रः धात्रः ३ पालय॥ मधुलसः
त्रिपुमानमाय॥ स्वस्तिवाक्कपालयाडा॥ अकृतापवादिः॥ ॥ नाक्षत्रः
ः वज्रमधुलसं॥ धृतिपालयं॥ आचार्यनः वजनः पूर्वदात्रं निस्यः म
धनलायनमाय॥ धनमधुलयाः नृनक्रय॥ कित्रनदडा थसकल
सा॥ वजनधीर्मा कित्रनथाय॥ वाक॥ ओं वज्रकीलयः उल्कीलयः स
वकीलांचवंधना स्थापय दू ३ दू हाः॥ ओं नृनरूद्रदात्रं तिष्ठसिधिलाय

नः सर्वार्थसाधनित्वाहा॥ धृतिवाक्कपालयं कीलनलिय॥ ॥ धन
मधुलडाकाय॥ क्रुसः ससकथन॥ ॥ कलसवसुनतियकं॥ नृलपु
लावजात्रा॥ धननिर्धसथनाडा॥ नृसुदलवाया॥ नडा नागध्वनः
ज्ञाकिपूवहलपतंकसेतय २ वनिडा २ नृनका २ तय॥ नागलाव
नाथ॥ नृनितिगून्यताननक्रं विस्वस्माजः कलीकायाः मधवजः व
नृनस्यत॥ पूर्वदत्रः नृनक्रनिल॥ दक्षिणदत्रः पद्म॥ यदि मद

नः न के कं ॥ उ ल न द नः वा गु कि ॥ न श न द नः म हा प द्य ॥ ब्रू न द न
 सं ख पा ल ॥ ने म ल द नः क ण् काल कं ॥ वा य द नः क लिकं ॥ व हि ष
 सर्व ना ग वि वि न्य ॥ गु गु लि सं न य ॥ प क्ष प चान प र्जा ॥ प ष्य न्ना स ॥ उं व
 नू ना य स्वा हा ॥ उं ब्रू न ता य स्वा हा ॥ उं प द्मा य स्वा हा ॥ उं न क का
 य स्वा हा ॥ उं वा सू की य स्वा हा ॥ उं म हा प द्मा य स्वा हा ॥ उं शं ख पा
 ला य स्वा हा ॥ उं क क्क ट का य स्वा हा ॥ उं कू ली का य स्वा हा ॥

पा २ न ३

ब्रू न वा क ॥ उं ब्रू न नः वा सू किः न क कः क क्क ट कः प द्मः मा हा प द्यः
 सं ख पा लः क लिकः व नू न शः द वृ तिः म हा द व तिः सा म शि रि वः द
 ध नः ब्रू प तालः कू नू र न द्यः प द्मः सा ग नः म हा सा ग नः न प
 म हा न पः शी कानिः म हा कानिः सू त्र पः म हा सू त्र पः ल द्वा दि
 क म त्रा द लः शि रिः म हा शि रिः ल क ल द्यः ग क्का ग क्कः म हा ना ग
 धि प तिः सर्वः ॥ उं वः कू ३ द ६ र स्वा हा ॥ ॥ क्षी त्र व लि वि य ॥ ना ग

प्रज्ञामर्गतं ॥ शुद्धमार्गादिः ॥ त्रुकात्रमुखत्वादिः ॥ दक्षिणा ॥
यूतिधूनकाडा ॥ अथः मेहावाक्कः दानपतिः स्वस्तिवाक्कः घालयं ॥
बुद्धाद्यतः शानाडाः नागयातदाहलय ॥ वाक्क ॥ ॐ त्रुमृष्टिग्लीकध
नोचमलुलः वहिमियाः नागाधियतिः विलनिष्ठिः ॥ मनलंप्रनतः
ॐ पित्रिशुः साहा ॥ कलसहाकलय ॥ ततोत्रुः नागो मेहनासः
कालनः पतालनीयमानं चिन्मय ॥ तिथ्यालखः कलससथस्य रुया

ॐ गृहः मलुलथनाथसः लंवनहाहायाय ॥ ॥ सासधिंवथिलाडा
॥ कूमात्रिसाधन

ॐ हुनहनः वज्रक्रोधद्वन्द्व ॥ धमन्तु नः रुमिधिमाडावानरुमिसद
ॐ हुनहनमात्रयस्सर्वः दुष्टान् व्याहयस्त्रैलोक्ये ॥ धम
न्तु नः ॥

ॐ नमो श्रीवृषभः ॥ ॐ नमो श्रीरत्ना कना थायः ॥ शुक्रासुमिव ह
विधिमाह ॥ द्वापात्रमाद्यपासमदल थायः ॥ रुतसाः वृषभसि विदिन उयकः
मरुतसाः रुक्मक उयकः ॥ आतान विदिन उयक दडाः ॥ पूडा कृच्छि उय
क दडाः ॥ राकिं कृ १ उयक दडाः ॥ रुतसा कलसन उयकः ॥ मरुतस
या द्वा लोक श्वनया विद्रुतया धरु वायक ॥ किं किनिशालपने ॥ त्र
हाकर २ कृत्रः धरुः पुतापः चामनः ॥ त्रसुमकुलः ॥ त्रनकन कुनत य ॥

कलसः सगंः गनसः महाकात्रः ॥ रुतमात्राः वालकुमारीः मनाः
द्रुक्कः सिंद्धमूः पञ्चगवः बलिपात्रः ॥ त्रमाद्यपासः पुतिमादिदव
ताः त्रनेकः देवताः पवाहाः रुक्मवाक्छ ॥ ॥ शुक्रार्थः लिचय ॥ गुरु
मंदल ॥ पञ्चगवः श्वधन ॥ काथन विषय ॥ दिगवलिविषय ॥ दसदिगसहा
ल ॥ सिंधलनय ॥ लोक श्वनया समाधियाय ॥ किलस पूजा ॥ दडा पूजाः द्रु
क सिंद्धमूनपी ॥ ॥ धनमकुलमालवना ॥ राकि कास्य रुतलप ॥ ॐ न

माः श्रीनलत्रयायः मेरिकननामदितापकाहावयत् ॥ ॐ समन्वाहनं
मां वृद्धात्रस्यखादिहसंष्टिता ॥ तिनं ३ ॥ थनदाहास्वानज्ञानकं वाक ॥ ॐ न
मां श्रीभूमाद्यपाशालोकधनाय ॥ श्रीकात्रसंरुवनोथः स्मिग्यमानसः श्रीमा
द्यपाशनामानालोकनाथं नमामिह ॥ स्वनमलुलसंय ॥ शक्तिकास्यहा
रुपरावना ॥ ॐ श्वरावगुद्धाः सर्वधर्मा नाद्यादि ॥ ॐ न्यतां विहावस्यद्र
दिपंकात्रनविध्वदलपयः कलिकापनिचलुमलुलषुतस्यापनिद्रिकानं

क
तस्यनिलभनः श्रीभूमाद्यपाशालोकधनाय ॥ ॐ समन्वाहनं
वाहविरुषितः समदितं विसा नाकं कनूनास्मिग्यमानसः शतामकतध
नसातः यहापविष्टः तापसः तात्राहकस्मिहमायकः वत्रदपैत्रधनिनः
ॐ नमा श्रीभूमाद्यपाशालोकधनाय ॥ थनदसुखधन ॥ ॐ दकि नदसु श्रीकात्रनवदुम
लुल ॥ ॐ वामदसु श्रीकात्रनसूर्यमलुल ॥ ॐ वद्रपयहसह ॥ कत्रयलवद
किन ॥ ॐ ॐ श्रीं रवेदं ॥ वामन ॥ ॐ लोमां पां नोदं ॥ ॐ श्रीः दसाहा ॥ षदना

स॥ उँ वज्रलकदं ॥ ॐ ति पा प र व द न ॥ उँ त्र मा घ पा ष्म क्रीः सिलस॥ उँ
 जया यदं ॥ लला ना उँ विजया यदं ॥ क० ॥ उँ दं स्वा वा दिदि ॥ उँ जय वि
 जयदं ॥ नारिः उँ त्र लय प्रदा यदं ॥ याद ॥ धृति ख ग न र ल ॥ ॥ ह न र जं न ॥
 उँ मे त्रिया यदं ॥ सिल ॥ उँ कति गरु दं ॥ लला न ॥ उँ वज्र विल दं ॥ च द्र दय ॥
 उँ रव गरु दं ॥ क र दय ॥ उँ ला क श्व र दं ॥ बाहर ॥ उँ मं रू या व दं ॥ त्रि का का
 ध ॥ उँ सर्व नि व र्त्र वि स्क रि दं ॥ द दय ॥ उँ स म क र ड दं ॥ स वा ग ॥ ह न र व

दहिन वा ह १

उँ या य ॥ उँ दं त्र जि ता य दं ॥ ला दा ॥ उँ दं त्र प त्र जि ता य दं ॥ वा म वा द ॥ उँ दं
 मा त्र से न्य प्र म र्द ना य दं ॥ मूरव ॥ र वा ल ॥ उँ त्र काल मूल क य ष म निय दं ॥ द दि
 नू जा ॥ उँ ध नं ड्रा य दं ॥ द हिन ग्रा नू ॥ जडा पुलि ॥ उँ व संध ना य दं ॥ वा म ग्रा नू
 र य डा पुलि ॥ उँ त्र मृ ता ला य दं ॥ पृष्ठ ॥ पा थ ॥ उँ त्र मा घ पा स त्र दं वं हा सा ह
 ॐ ति न्या स ॥ गृ क र्वे न धू पा ॥ ला व ना वा न ॥ उँ द दि सु द्रि का व नः ल
 हिः मू द्वा स क्का यः त्र क नि षुः त्र व न स्मि ताः ॥ श्री त्र मा घ पा सः समा द

ॐ अमृतं कृष्णं नमोस्तुते ॥ मधु पक्विम

लेः शक्यं यत् ॥ पाद्यादितय ॥ ॐ किं त्रमाद्ययासलाकधनायत्रुर्धं
प्रतिष्ठा स्थादा ॥ ॐ द्रुं वैदा ॥ पूषन्नास ॥ मंदल ॥ ॐ त्रमाद्ययासलाकध
नायकिं स्थादा ॥ मधु ॥ ॐ किं त्रैलोक्यं विद्यायवजपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ मधु
ॐ मनिपयद्रुं ॥ मधु ॥ ॐ अमृतं त्रायवजपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ मोलिसिलपूर्व
ॐ एकस्मै यवजपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ नकपयद्रुं ॥ ॐ त्रमाद्याकसायसा
दा ॥ त्रुं सुदधिं ॥ ॐ तात्रायै स्थादा ॥ उदासी यन्त्रि ॥ ॐ एकं तितात्रायस

दा ॥ त्रुं सुधनकुमात्राय स्थादा ॥ यस्तु कत्रान ॥ ॐ त्रयावलाक
नधनाय स्थादा ॥ ॐ तयद्रुं नैविन ॥ ॐ खैख सर्वधनय स्थादा ॥ कृष्णं नवायुव
ॐ रुयग्रीवाय स्थादा ॥ नगनादयद्रुं सान ॥ ॐ त्रुं सुदलस ॥ पिवा
के पूर्व ॥ ॐ त्रुं यत्रात्रिताय स्थादा ॥ पूर्व ॥ ॐ त्रयाय स्थादा ॥ दक्षिण ॥ ॐ माल
मेनयुमदनाय स्थादा ॥ पक्विम ॥ ॐ वत्रदाय स्थादा ॥ उत्तर ॥ ॐ त्रुं कालमृत्
प्रसमनाय स्थादा ॥ त्रुं ॥ ॐ त्रमाय स्थादा ॥ नैमन ॥ ॐ वित्रयाय स्थादा

ॐ नर

ब्रह्मज्ञानि।

वायव्या ॥ ॐ नमः प्रविश्याय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॥ तत्र वाक्
स्वादस्य पूर्वकं ॥ मप्रत्येकवृद्धाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः सूवर्चप्रतावि
नितितनाशायः तथागताय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः सिंहविक्रदितः तनाशाय
स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः सुप्रतिष्ठितनाशाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः समन्तनाश
कृत्तुष्टीकृत्तनाशाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः विषयिनय तथागताय स्वाहा ॥ २ ॥
॥ ॐ नमः सिषिन तथागताय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः विश्वरवाय तथागता

य स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः कर्ककृत्तनाश तथागतय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः कन
कमूनि तथागतय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः कालपाय तथागतय स्वाहा
॥ ३ ॥ ॐ नमः ॥ कमूनय तथागतय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः सुप्रति
किर्तितनामधराय तथागतय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः समकावलासा
य विजितसंग्रामश्रिय तथागतय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः ॐ डककुध
रश्रिय तथागतय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः नक्षत्रप्रलस्य श्वननाशाय

स्वाहा ॥ ४३ ॥ ॐ नमो वाद सदल ॥ हन विदिग पुल ॥ पृषता नाय स्वाहा ॥ प
 र्वपुल ॥ ॐ धपता नाय स्वाहा ॥ द किं पुल ॥ ॐ दि यता नाय स्वाहा ॥ प
 किं पुल ॥ ॐ गधता नाय स्वाहा ॥ उत न पुल ॥ थया पिना ॥ ॐ ॐ दायस्
 नाधिपत स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ॐ रमाय प्रताधिपत स्वाहा ॥ द किं ॥ ॐ वत्रु नाय
 नागधिपतय स्वाहा ॥ प किं ॥ ॐ कूव नाय रक्षाधिपय स्वाहा ॥ उत ॥ ॐ रूग्म
 न राधिपतय स्वाहा ॥ रूग्म ॥ ॐ नैमत्य नाक साधिपय स्वाहा ॥ नैमत्या वाय

सु ५
 वायव नाधिपतय स्वाहा ॥ वायवा ॥ ॐ ॐ ॐ नरु नाधिपतय स्वाहा ॥ ॐ सा
 ना ॥ ॐ उद्धवे द्रु नला काधिपतय स्वाहा ॥ उद्ध ॥ ॐ चद्रान क राधिपतय स्वा
 हा ॥ पूर्व ॥ ॐ सूर्या ग्रहाधिपय स्वाहा ॥ किं ये ॥ ॐ रूद्ध पधिविला काधिप
 तय स्वाहा ॥ रूद्ध ॥ ॐ काम वित्रा रू नाधिपतय स्वाहा ॥ द किं ॥ ॐ नागरला
 धिपतय स्वाहा ॥ उत न ॥ धनप कप वा न प्रराः नास्याः द्य ७४ वादन ॥
 सु ति ॥ वूद्ध न मा मित सत तः ॥ न न के पुन पुनः धर्म प्रल कः स य केः

१ श्रीगणेशाय नमः सर्व

नमामि सा ननंतथा ॥ शुद्धकदलः तुर्या तलासः सदृशः पद्मवत्सस्मिन्
सर्वज्ञविदयाध्यानः नमामि रम्यनंदनः श्रीपासजाता नमः वामसीतक
मधुत्रक कमलदलान्तमः पुष्पकः वंद्यः यत्र मधुत्रः तुरवाणिनाका
नूकयामय ॥ यनातप्यन ॥ विज्ञानत्यादि x ॥ ॥ तनुपापद

सनाकतकातीतः ॥ ० ॥ त्यादि x

॥ पुथमजागताः वाक्कः मकुटजाग

वाक्कः कतिनिशुचनत्यादि x ॥ श्रीगणेशाय ॥ पूर्ववत्तुवलिविषयः वाक्कायं

काननत्यादि x ॥ काप्रहायकउथा ॥

थनाकलसपूजा

थनादडापूजाकुरुसिंधर्मनया

थनलिशिषापनिकर्म कथय नयः गुत्रूमलुलदनकवलिः मताः पू
जाः पक्षगवाहनकः मंदलवलिविसर्गनि ॥ थनत्रसुगुगभतस्यः संघ
लषनः रमिषधनः ॥ वाक्कः श्रीखविलादक ॥ ॐ श्रीखदलवदमदनि

वज्रीरुववजवश्च दं॥ॐ वज्रनक्षत्रं॥ वज्रनथियमंदलथामता॥ थन
मलुलथामवाक॥ॐ सर्वनाथामतासानः सर्वतागैथानालयः सर्वधर्म
गनेनात्मांदसमलुलमूलमं॥ वृद्धमलुल॥ द्वादहास्वान१ मलुलतया॥ॐ व
ज्रपूषा दं॥ त्रिकिकास्यं हात्रलुपं वाक्क॥ॐ समं वाहं नुमां वृद्धा नृणां यादिकस
सितां॥ अ३ तान॥ॐ नमो वयः॥ॐ श्रीमच्छिवः वृद्धसगनरकानेकायपाया
वमनाद्यं प्रति कृष्णदा॥ वृद्धमलुलस्वानवायः॥ॐ श्रियो वैनावनाय

वज्रपूषां प्रति कृष्णदाः त्र्यादिष्वपक्षपचात्रपूजा। सुति।ॐ वृद्धं प्रवृद्धं व
धर्मो गार्ज्जना नं विष्णुं समकलितुं गुणकनः समन्तमूनिदु गार्ज्जनी
ममहावाधिसदां नमामि॥ संप्रदाहनवाक्क॥ वृत्तयसाहजवान्सम्यक्
वृद्धविद्यावनलसपन्नगतंः सगतालाकविदनूरुनपूषदम्यश्वधिस
स्मादवानाक्रमानूषानाक्षवृद्धारुगवतः वृद्धनत्नाय वृद्धपूषमलुल
निर्यातयामि॥ सकप्रमानदाहलपाहलपं॥ नृक्षंतलवहायक। वाक्क

नवाय ॥ ॐ आर्यप्रज्ञापानमिताय वज्रपूष्यपुनिक्रसाहाः आदि x पके
पवात्रपूजा ॥ सुति ॥ आ सर्वरुतमानयत्समं आदि x ॥ ॥ संप्रदाहन
वाक ॥ ॐ नमस्तुत सागत्रपुवदिः ॥ साओपासिकपात्रनिकंत सौधर्मत्रत्ता
यः ॐ दंपूष्यमउलनिर्ग्यातयामिः ॥ सकप्रमानदाहलपाशलय ॥ त्रुक्त
लखदायक ॥ वाक ॥ ॐ पुष्पापात्रमिताय महापितमहासुतमहानीलत्रलप
कत्रपूष्यदस्तः ॐ दं वलियक्षमृतं त्रुत्रिद्युपिचूरपुष्पावर्द्धनीः कलर

मधावर्द्धनिधिति २ वृद्धिवर्द्धनी स्वाहा ॥ ॐ ॥ ततासंघमउलथाय ॥ वाक ॥
सर्वत्रकनसंपूर्तः सर्वत्रकनवर्जितसमतलुडचित्ताग्रंघाषमउलम
लम ॥ संघमउलदाहासी १ तय ॥ ॐ वज्रपूष्यदं ॥ शकिकास्यं हात्रल
पः वाक ॥ समन्वाहत्रनुमावृद्धात्रसखादिहसंस्तुतां ॥ धात्रुतानः ॐ नमो
संघाय ॥ वादाद्य ॥ ॐ नमोसंघायः वलदं कमलविस्तारार्कत्रेलाकाधि
पतिप्रतत्रकवर्जमहा ॥ कलोकनाथनमामि हः श्रीमहि संघमउ

लहकावकायः पाद्यं प्रति कृत्वा हा ॥ संघमं उलसस्वानवायः ॥ ॐ अर्थ
 अर्थीवलाकि नस्व नायवज्जपूष्यप्रति कृत्वा हाः आदि ॥ पंक्षपचत्र
 पूजा ॥ सुति ॥ संघनमाभिसृतं तं वत्र पद्मपाणीः मेलात्मकगगलस
 मनहदुर्गकाधियापनहिताधृतमरुदाध्वविस्करिर्न कृत्रिखगहापु
 नमाभिरुहाः ॥ सप्रदाहनवाक् ॥ सति सद्येऽभ तापहि रुलंप्रतिपन्न
 गमिभूनागमिनंसति सद्येः अहन् रुलंप्रतिपन्नकाः अहन् रुलंप्रतिपन्नकाः

रुजवांनार्थीवहिकवाधिसत्त्वसद्येः अहन् वनियः अहन् वनियः अहन्
 नहन् वनियः अहन् वनियः अहन् वनियः अहन् वनियः अहन् वनियः
 पूष्यमं तुलनिय्यातयामी ॥ अहन् तलरवहायकवाक् ॐ नमालाक
 नाथाय दवा सूत्रनत्रयकवाक् सादिहिः वदिनपादपद्माय अहन्
 षन नकसलादलविदितस्य नायमहाकात्रलिकाय वंदवलि
 पक्षमृतादिसहितरुद्र २ सर्वसत्त्वानां अहन् नत्रकादि २ः रवंद्रका

21

ASIA ARCHIVES

741

THE ASIAN MUSEUM

नय २३ उच्चैः २ समूधन २ वृद्धः धर्मः संघः सत्र वादिसत्र न
ॐः आः किं दू दू स्वाहा ॥ ॥ धनवृद्धः धर्मः संघयाः स्वकन
॥ सा हं मदासिता वीमा वलायां मूपादायः शिवदा वाधिम
पुलनिरव पुलात तावत्कृपाक नामिः वृद्धरुगवत महाकावनी
क सर्वरुः सर्वदशितः सर्वतयाति न महापूतृषः अरुदकायः म
हाकावलीकः धर्मकायं सर्वत्र कलसंपूर्णः शत्रुलंग क्लामिः नि

वृद्धनया कायं द्विपदाना मग्नता दृष्टः वृद्धसर्कः माकक ना
मि ॥ ॥ देनाथरुगुनरुमि स्येन थूगुलिनामनः थयदशनाया
काथनिया थूगुलिदिन सः थूगुधर्मलाय मातृवकाताः वृद्धमकुमरुल
थलाता रिपनि स्येन थललयरुलः देनाथरुगुनरु वृद्धरुगवानरुयिगधि
क्रपालसाक नूनावन सर्वरुधालसा रुतरुविष्यवर्तमान सिधाडा विष्य
कप्रसमसं सत्वपानिरवनाडाः कनूनावन रुयाडा वलिपारुयवावकाडा

॥ हनाथ हगुत्रः थनिग्रादिनस थडा २ नामनंद सनाथानाडा थनिग्रादिन
 सः थगुलि धर्मलापयातः गलता वाधिमगुलखलुमरुलः थलताः अ
 वलिका संघयाक सत्रनडा न ०० काश्ल ॥ हगुत्र श्रीसंघश्रूपाथि क्रधल
 साः श्री अर्थी वलाकि तसत्रः समं सत्वपालिः सकलामृकि कस्यं विष्ठाकम
 थधि कपत्रमसत्रः संघयाक सत्रनडा नधकः त्रिमिस्यं पाथनाथाना ॥
 ॥ समंचादु न तु मां दशदिश लोका धा तु सः निपतिताः वृद्धा हगवना

धि
 वासंत्वा ग्वत्राचार्यपाधायः ॥ ॥ हनाथ हगुत्रमात्मा थनि कलपालय
 कृपाः मिगुलि दिसानमनाडा विष्ठाकर गवन्न तथा गतूरूपानि स
 कलंः हनं वाधिसत्वपानि सकलः गुत्र उपाध्याः थथिपानि हडा न
 त्रिपनि सकलं सत्रनडा नधकं पाथनाथाना ॥ ॥ अहमवनामात्र
 किंचित् कायवा धुनाहिः सवृद्धवाधिसत्वात्मानापित्तोः तदं न्यां स
 गमा ०० हगुत्रमनिहगवन्न त्रषमया पापक ३ कर्मकृतः कालितवा

हवन् ॥ ॥ इनाथ हपुह थनित्रिमिसनप्राथनायानात्रिमिसन
चिकिधंखसंयानागुपापदयूडा सनिडनयानापापदयूडा हनेन
गलनयानागु वचनयानागुपापदयू समस्ततथागत वाधिसत्वप
निक्रयानागुपापदयूडा गुत्रु गुत्रुमाम संचपनिकदादयाना
गुदयू हनेन हथुडमसयानागुपापदयूडा ॥ ॥ तत्सर्वत्रकंधापिदधि
त्वाः सर्ववृद्धवाधिसत्वानाः श्रवायस्थानिकः अगयावत्रयाप्रवत्रयाः

पुनिदसयाः शानूनस्यत्रलपुनिच्छादयामि ॥ ॥ थपाप सकलच्छु
लियानाडा ज्वलमूनकाडा निग्रनकाडा समस्त तथागतपनिद
डानः वाधिसत्वयनि गुत्रुपनि थधि २ पि गुत्रु २ हयाविश्रकपनिद
त्रिमिसनथमनयानागुपापसकलं नालनधकंप्राथनायाना
हगुत्रु हपुमीत्मा ॥ ॥ थनात्रमाचयागलुलथाय ॥ वाकं ॥ सर्व
सत्वदिनार्थयः शुद्धप्रकृतिनिर्मलः समन्तरुडवावागुमनात्रथ

मधुलमरुमं॥ ॥ धनपातार्थः वाक्क॥ ॐ श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमाधवा
लोकेश्वरहोमानकायपाद्यावमनार्थप्रतिक्रियादा॥ ॥ शक्ति
संहारलपवाक्क॥ ॥ ॐ समन्वाहनं तु मां वृद्धाश्रयत्वादिह संश्रिता॥
ॐ श्रीमाधवास्तलाकस्तनायः॥ ॥ ३॥ धनदादास्वान्नानकवाक्क॥ ॐ
श्रीकारं संखनाथं करुनाथं सिद्ध्यमानं संः श्रीमाधवास्तनामानां ला
कनाथं नमामिहं॥ मधुलस्यैतं॥ ध्यानवाक्क॥ ॐ सखवसूदासर्वध

मानां सखवसूदासंः शुचतां ज्ञानवजः शुचतां विशवाद्दुदिसूपंक
नविश्वदल्पद्वयकथिकापत्रिचतुमधुलः तस्यापत्रिद्रिः कारं तस्य
विनामनः श्रीमाधवास्तलाकस्तनायः॥ ॥ सखकुलुद्वना
हं श्रीसूवाद्दुःविरुषि तं समुद्रितं विस्ताराकं करुनाथं सिद्ध्यमान
संः ज्ञतामकुठकः धनसाकं मङ्गलपविकृतापसः ताताहकटिसमाह
कं वनदपं करुनाथं श्रीमाधवास्तलाकस्तनायः॥ ॥ ३॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

धनयासयायः॥ ॥ॐ दक्षिणहस्तशुक्राग्रनवदुमकुलं॥ चन्द्रमाशुभं
 ॥ॐ वर्महस्तशुक्राग्रनवदुमकुलं॥ शुभस्वउ॥ ॥ॐ अश्विं स्वदं॥ अश्विं
 लिनि॥ ॥ लोमां पातावं॥ स्वउ॥ अश्विं लिनि॥ ॐ वज्रपद्महस्ताः सर्वतथा
 नवजालीतसमयदं॥ सिलसंधि॥ ॥ॐ दक्षिणविजयदं॥ कथू॥
 ॐ दक्षिणवज्रपद्म॥ हृदि॥ ॐ दक्षिणशुक्रपद्म॥ नाहि॥ ॐ मेति
 यदं॥ दक्षिणवज्र॥ ॐ चित्तिगह्वरं॥ वामवज्र॥ ॐ वज्रपालियदं॥ द

दणयाय

चित्तकर्म॥ ॐ स्वगह्वरं॥ वामकर्म॥ ॐ लाकश्वनसर्वनायदं॥ लल
 न॥ ॐ मश्रयायदं॥ नासिका॥ ॐ सर्वनिर्वर्तनविस्तृतिनदं॥ सील॥
 ॐ समनरुद्रदं॥ चक्रद्यानश्रुतसमनसर्वांगेषु॥ ॐ दक्षिणशुक्र
 दं॥ दक्षिणवज्र॥ ॐ अश्विनायदं॥ वर्मवाह॥ ॐ दक्षिणशुक्रपद्म
 नायदं॥ मुख॥ ॐ दक्षिणशुक्राग्रमूलपुष्पमनायदं॥ हृदि॥ ॐ दक्षिणवज्र
 यदं॥ दक्षिणशुक्र॥ ॐ दक्षिणवज्रनायदं॥ वामशुक्र॥ ॐ दक्षिणशुक्रपा

भद्रि॥ सिलसं॥ वृत्तिन्यास॥ ॥ त्रिमाद्यपासमलुलः पक्वपत्रपूजाः
 पूष्यन्यास॥ ॐ त्रः कृत्वा हा॥ दथुसं॥ ॐ त्रिं स्वाहा॥ दथुसं॥ ॐ मलिप
 यं कृ॥ दथुसं॥ ॐ त्रमृतालाय स्वाहा॥ पृष्ठलिवन॥ ॐ त्रमाद्यां कृ॥
 यं कृत्वा हा॥ त्रुज॥ ॐ त्रायै वज्रपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ दक्षिण॥
 ॐ हृक् त्रैयै वज्रपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ खडा॥ ॐ सुधनकृमायाय वज्र
 पूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ त्रुज॥ ॐ त्रायै वलाकि तं स्वाहाय वज्रपूष्यं प्रति

कृत्वा हा॥ नेम्य॥ ॐ खं खलप्यनाय स्वाहा॥ वायुवा॥ ॐ हयग्रीवा
 यवज्रपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ ॐ त्रान॥ ॐ डाय स्वाहा यादि० ॥ पक्वप
 वानपूजा० ॥ त्रि॥ लाकसत्रं जीलसां कं त्रिमाद्यगुनसागरं त्रिमा
 तारकृतं मौलिः नमामि त्रिमाद्यपाशीनः श्रीकान्तसहवनाथं क
 र्त्तुं त्रिमाथं सिग्धमानसं त्रिमाद्यपासनामानां लाकनाथं नमामि ह॥ ॥
 धनवर्तकाय वाक्॥ ॐ नमो त्रिमाद्यपाशीनां लाकनाथः धर्मसूतं

ब्रह्मसिंह

पुनश्चामिवजधर्म्यज्जी ३ स्वाहा ॥ ॥ मंदलसतया ३ वाक ॥ ॐ नमो श्री
ब्रह्माद्यपागलाकसनाय ॥ शुद्धं कुरु ननु रवाहसः सहसा यद्यकनं स
स्मितः सर्वं विदधः नमामि हर्यः श्रीपागलाकान्तमं वा भत सीतकम
लं कलातमं पूरु कं वदं पत्रम्यस्रं सित सा लो कान् कं घामय ॥ न
दा क्वाय ॥ थन नृद्य वियः तायः आरवः पक्कं नलः दाहा स्वांगुतः साद
द ॥ वाक्क ॥ ॐ सनरसिनि २ कनर २ पच २ हन २ हो हो द्वि द्वि द्वं द्वं ॥ ॐ का

ननु कुरु सर्वं धरिनि २ धन २ नन २ मन २ वन २ नस्मिं सत सह ॥
सपमलि नलनि नन २ नप २ रगर्वः सामादित्वयमव नूनं कुरु
ननु कुरु सारिवदवगलाविल वनन कम लायः रुद्रा मानस्य आग्र
लो रुका मनार्थः श्रीब्रह्माद्यपागलाकसनाय नृद्य प्रति कुरु स्वाहा ॥
संखपूजायाय ॥ ॐ संखनिधाना मनमः ॐ पद्यनिधाना मनमः ॥ थन
निम कुरु दाहा स्वांगुतः निय कुरु आरव तान ॥ ॐ नमो वलप्रयायः ॐ न

मा अथावला किं तेष्वनापवाधिसत्त्वायः महासत्त्वायः महाकात्रनि
 कायः तद्यथाः अमाद्यसिलमहाशीलशुद्धसत्त्वरत्नरत्नसमृत्तरत्न
 अविह्वलितत्वरत्नसमकावला किं तेष्वनापवाधः ॐ अद्दद्दद्दद्दद्द
 ॥ धाल २१ ॥ शक्तिः लयसथनाममलसंहायकं तय ॥ वाक् ॥ ॐ अ
 माद्यपाणिः सर्वदुःखसमयमृदापुष्टकधर्मगुणसिं समुद्रकाना
 णा किं पुष्टिः सर्वत्रकाकृत्स्नसिंसाहा ॥ धनस्यकन ॥ ॥ समन्वाह

स १

तद्दंतः तथानावाया इह तावावतजिवः प्रानातिपापः पुतिवित्रम
 तां निहंतदधुनिहंतशस्त्रलजितोदयावन्ताः सर्वसत्त्वेषुः अरुसक
 ढसंः पिपिलिकामपादाय ॥ हसिखणिनि कृपनि सनः नृकचिह्नप
 दाडानंदनः गुननवास्तवताः गत्यधालसाद्रपा २ याः बद्धपूतपनि
 स्यंज्वलनजिडाववयश्नलः प्रानिस्त्रायगुनमयाकः समुत्तुन
 पालाडामस्या कः महानकावकः कनूनावनकः शयाडाचानः सम

संप्रानिस्तककत्रुनाक्रियातयाडात्रकापाकः दनंखननंरन्मरुडा
पनिः गत्रउत्रात्रदंसचकात्रकुमिवासापायिंसम्यतः दनंधूलनत्र
मरुडाभिमिवात्रादियथथिपिंसत्वपानिस्तकल्यंथनधर्मनप्रतिप
लमातं ॥ ॥ यवंमवाहंमावलामूदायः शवत्त्रलात्रिगामिनीता
वत्सप्यादमातनः प्रानास्तिपापः पुहायः प्रानास्तिपापंप्रतिविलमामि
॥ निहंतदद्यानिहंतकगस्तुलत्रिनादमावनाः सर्वसत्वषः प्रागितरुषः

अनसः कटसः मरुक्कटसपिपिलिकामूपादाय ॥ ॥ दनाथहगुत्रः
थनि कुलपालयात्रास्तथजिमिसनः थगुधर्मलायताज्वलानाधलस
थनि याः त्रानिनिस्तज्वलतास्यउदयमरुलाउलत्वं प्रानिस्त
यंमखतः दनंदायंमखतः मरुत्रसुलायालाउस्यायंमखतद
नंप्रानिषनाउदमावनकत्रुनावनरुयशलः खननंरन्मरुव
सापायिंधूलनत्रन्मरुवमिमिवात्रादियनः थगुधर्मनप्रतिलयाय
का

शूलं ॥ ॥ नृवंमवा दंप्रथमनागननषांमार्थानामदनां मदंनवृद्धः
विवृद्धस्य नृवंविधियः नृवंकतामि ॥ ॥ दनाथदगुनृवाचार्यः नृ
आथनिष्ठलयालयात्रा नृथांतिमिसाः क्रयाश्यावृद्धनथागतपति
साः गत्यक्षिथं विधिकर्ममातः नृआतिमिस्यनं नृथां कर्मयाप
शूलं ॥ ॥ पननपदंसमन्वादनः हृदकनृथा नृथाश्याहृन्नाः नृव
क्रिवं नृदसुदानं नृवक्रवर्थाः मखावादः सूनामेनयः मशप्राणाद

सुनं नृवांगितावाशमानाः गंधविलपनं वर्ककं लखना उच्चसयनं
महासयनं नृकालरात्रनपूतिविनमता ॥ ॥ दसिखपनिष्ठपनि
स्यं हृदकनः गुनृननृक्रादय गुखगथधलसा क्रयायावृद्धपूतपनि
स्यनः त्रिआनवदलपूतलः मवयाधनमविषकं मकाडा नृवलस
रात्रनमयाकः वृद्धवर्थाधललयागः मखगुः मन्तागुमया
कः नृसखरमक्रकः हनः लूपूगतिवर्जा आदिधनुत्राकपः

मधुपानादियं काययागु ॥ रुक्मनमया कः दनः लाः डाः खः
चिः चिकः थधिगु वसुक कः मनः ॥ दनः नानावाय थयः म हल
ः ग्राखं न द्रुयगु ॥ अनेकरत्ना कः नमः चकः नखा कः पक्क गन्ध न
लेय नमया कः त्रंगी चंगी ठा मत नमति डाः दनं म चखा तालि वाः पलं
कीः दलिः गमदिः वदिः नाला सा लुगम ॥ लां मुसिक गमः थधिगु त्र
समाय म तठाः दनं अ वल संहा रुक्मनमया कः थधिगु धर्म लाय

यातः कृपनि सनः ताल त माल ॥ ॥ नवं म वा दं अ म कं न्नाया
ः ॥ माः वा ला मू पा दा यः शा वत चू ना त्रि गम मिनिः शा वत स थ्या दया
त नैः अ द रु दानः अ व द्वा च यः मे र वा वा दं स न्ना म त्र यः मे य मा द रु
नः न ल्व गी तः वा दि मा लाः ग म्ध विल य नः व ल क रु ख नः उ च स य नं
म हा स य नः अ का ल हा रु नः पु ति विल मा मि ॥ अ न्य मा दः अ क मा रा
नः त र वा मा यी नाः सि ष्ठाः अ न् ॥ थः अ नू वि धि यः अ नू क लो मि ॥

॥ दनाथदुगुनसागरः थनिक्कलपालयाः त्रः रूथत्रियनिमनः थ
उरनामनः थगुलिधर्मिलाययानिमलिनेः थनियाः नात्रिसडानः
उः ज्वलताः सूर्याउदयमश्लथलताः त्रः सत्यखद्रायंमखताः द
नंमवयाधनमवियककायमखताः दनं वक्रवयोः धल्ललया
उः मखगुः मत्यागुयायमखतः दनं काययागुः जमिः वेफा
त्रुहिः यसेः त्रनः धतुनः थथिंदगुः कुं वसुनयमखतः दनं

नानावायः थयगुः महालगुः प्यारवनदयगुः त्रनगपकेग
धनलपनयायगुः दननावावल्यानिसाः उः सतनः तियाः उः त्र
नगलाकस्वाननं कुं दाउः त्रनिसनः रवाताः मचः पालकिः वगिः
लिवाः दुगमः दगमः नाशालासाः नाथिगुलासाः त्रनिसखहागया
यगुः थथिं गुमकतां तालुनं शलः दनाथः दसासाथनिरिपनीमनं
थच्याताः वसुकः त्रधर्मः धकसियाउः समसं तालनाडावाधिसुय

निस्यनं गायविधिधातुः आताथनिद्रिपनिस्मनः कुलपालस्यनः अ
स्यदयाथः थथिगुधर्मलापयाकात्रनः थतत्रकर्मः सकतांतोलन
इलं ॥ ॥ अननादंसिलसम्भनः समादाननः अनागतः धनितथा
गतालवयः अदन्तसम्यक् वृद्धविद्याचत्रनसंपन्नसुगताला क
विदन्तुत्रयत्रषदम्यथा नथिः सास्नादवानाकं मनूयानाकं वृ
द्धाहगवान् वृचः पाषधसितः विलुपतिस्कात्रायः यागसहाग

यः सर्वसत्त्वानाकं उर्लयः वृद्धसत्त्वप्रापयामि ॥ ॥ दनाथः
दगुत्रथनिक्कलपालयादयानः थथिगुधर्मलानाताः विपश्चित
थागतः प्रहितिः समस्तं तथागतशुभापनिमकलः त्रिमिस्यनपू
त्रायायत्रागइलः दगुत्रः अकृतथागापनिशयः गाथिं द्रव्य
लसाः समालयाः हनरविश्याः सियाताविद्याकद्वः संसात्रयः
हमाताः अनगुः इथातानगुः हनरुयाताः आयिगुः थानस

कतांसि घाटा विद्या कदा दनं दत्तं विद्या न संशु क श्या उता न
लम दस्य निद्र श्या उता समस्त सत्त्वानि या लला का या उता विद्या क
दा ॥ दनं द वला कया मनूष्या ला कया दान था स उ धा न या ना उता विद्या
कथा थि दत्त तथा गत पानि स या गु धर्म वर्त थू गु नूष मि वर्त या य क
या का न न धल सा विलया अलं का न या य विलय निष्का न या य नः
दन समस्त या ग वांछा ला य या नः सर्व सत्त्व प्राणि य नि स क लं उ क

५ सगं वियः वर्त काल उता य ५

न या य दय क या न दनं त्रि मि स्य न तथा गत या य द ला य दय
क या न थू गु धर्म कल याल या अ स्था थः अ उता त्रि मि स्य न थू ध
र्म वर्त सदा काल धल लय शल दना थ द गु नूष क सि स्य प
नि स्य न वि न या ना ॥ ॥ ॥ य न न ल म द ल दान क ॥
सि रं लय ॥ कि ना न ॥ क मा य न ॥ स ता क न ॥ अ जी वा द ॥ द व द
कि ना ॥ म गु ल ध य वर्त कान द्वा क म गु ल न ल उता य गु
१ वा के उता व उ व ची व ॥

त्रूपूजा दक्षिणा निमलासि क्रलंति यः पालंयाय ॥ ॐ ति
पोखधवल पथमदिनः ॥ ॐ ॥ धनलिसतिखन ॥ पूजा
संकल्पयाक ॥ गुत्रमधुल ॥ कसः सगं ॥ ॐ नो मदाका ॥ म
त्राः वालकुत्रि मता पूजा ॥ दवपूजा ॥ मधुलपूजा ॥ धूनकाव
॥ सिखयनिः कर्मकधून तस्यः गुत्रमधुल वलि कीयः ॥ मता
पूजा ॥ वलकाहन ॥ वाकः ॐ वज्ररुतव ॥ पूजायाना ॐ मधुलसंक्रय

॥ कृमादान ॥ धनलिसिष्याधिवासनयाय ॥ व्रतसूत्रकाज्ञानक ॥ मता
रुः ताचा वज्र सिद्धलय ॥ नकिधलंदानक ॥ कितान ॥ कृमा
पनः सताकृत्रासिवचनः दवदक्षिणा मधुलविस्रनः सगं
तयः कलसतयः कसकसिंक्रमंतयः गुत्रपूजा दक्षिणा सकल
यताः कसक लडाकायसिंक्रलंतिकः सगनेतिकः स्नानविषयः
सूत्रविषयः ॥ नतानत्रप्रवादविधिमाह ॥ धनयकेयवानप